

बीकः, पुं, (अजतीति। अज + "अजियुधुनीभ्यो दीर्घश्च।" उणा० ३।४७। कन्। अजे वीभावः।) वायुः। यची। इत्युच्चारिकोपः। मनः। इति संक्षिप्तसारोणादित्तिः।

बीकाशः, पुं, ( विकश्रममिति। वि + कश् + चच्। "इकःकाशे।" इ। ३। १२३। इति वैष्वसवर्गस्य दीर्घः।) रश्मिः। प्रकाशः। इत्यमरः।

बीचः, पुं स्त्री, इटिः। विपूर्वेणधातोरन्प्रत्ययेन निष्पन्नमिदम्।

बीचबं, स्त्री, विशेष्य ईचकम्। दर्शनम्। विपूर्वेणधातोरनट् (छुट्) प्रत्ययेन निष्पन्नम्। (यथा, भागवते। ६। १८। २८।

"मनो जग्याह भावशा सखितापाङ्गवीचबैः॥")

बीचापन्नः, वि, ( बीचामापन्नः।) विख्यापन्नः। इति हेमचन्द्रः। १। ६७। (बीचामापन्नः। इत्येवमेव।)

बीचितः, वि, ( वि + ईच + क्तः।) विशेष्य ईचितः। इटिः। यथा,—

"पापघ्ने प्रञ्जके तु पापघ्नयुतवीचिते।  
तथैव चाष्टमस्थाने रोगिणां मरणं दिशेत्॥"  
इति दौषिका।

बीक्ष्, स्त्री, ( बीक्षते इति। वि + ईक्ष + यत्।) विनायः। इत्यमरः। इति मेदिनी। ये, ५६।

बीक्ष्, पुं, ( वि + ईक्ष दर्शने + यत्।) लासकः। घोटकः। इति मेदिनी। दर्शनीये, वि।

बीजा, स्त्री, ( बीजनमिति। वि + इज् + "गुरोश्च हजः।" इति चः। टाप्।) शूकश्रीम्नी। गतिभेदः। नर्तनम्। इति हेमचन्द्रः। अश्व-  
गतिभेदः। सन्धिः। इति शब्दरत्नावली।

बीचिः, पुं, स्त्री, (ययति जजं तटे वह्यतीति। वे + "वीचो हिच।" उणा० ४। ७२। ईचिः। च च षित्।) तरङ्गः। इत्यमरः। (यथा, रघुवंशे। १। ४२।

"सरवीचरविन्दानां वीचिषिचोभश्रीतलम्।  
आमोदसुपनिब्रमौ खनिचावातुकारिणम्॥")  
खण्डतरङ्गः। अथकाशः। सुखम्। इति मेदिनी। ये, १०। अल्पः। इति हेमचन्द्रः।  
किरबः। इति षटाधरः।

बीची, स्त्री, ( वीचि + कृदिकारादिति ङीष्।) वीचिः। इत्यमरटीकायां भरतः। (यथा, ट्टवतुर्वहितायाम्। ५६। ४।

"सरायु नलिनोच्छन्निरफरविरशिशु।  
हंसांवाचिप्रकण्डारवीचीविमलवारिणु॥")

बीचीतरङ्गः, पुं, न्यायविशेषः। स तु शोचै शब्दस्य उत्पत्तिकारणरूपः। यथा,—

"बीचीतरङ्गन्यायेन तदुत्पत्तिस्तु कोर्णिता।  
कदम्बगोत्रकन्यायादुत्पत्तिः कस्यचिन्मते॥"

इति भाषापरिच्छेदः।  
ननु न्दङ्गाद्यच्छेदेनोत्पन्ने शब्दे शोचै कथमुत्पत्तिरित्यत आह बीचीति आद्यशब्दस्य वहिर्हृदिगवच्छिन्नोऽन्यः शब्दस्तेनैव शब्देन जग्यते तेन चापटलजापक एवं क्रमेण शोचोत्पन्नो यद्गत इति। कदम्ब इति आद्यशब्दाद्दश-

दिक्षु दृश शब्दा उत्पद्यन्ते ते चान्ये दृश शब्दा उत्पद्यन्ते इति भावः। अस्मिन् कस्ये गौरवाद्युक्तं कस्यचिन्मते इति। इति सिद्धान्तसूक्तान्वली।

बी(वी)जं, स्त्री, (विशेष्य कार्यरूपेण अपत्यतया च जायते इति। वि + जन + "उपसर्गे च संश्रायाम्।" इति डः। "अन्येषामपीति।" उपसर्गस्य दीर्घः। यदा विशेष्य ईजते कुचिं गच्छति शरीरं वा। ईज गतिज्जलनयोः + पचाद्यच्। यदा, बीजते गच्छति गर्भाशयमिति। बीज् + चच्। यदा, "बीजप्रजननकान्त्वसनखादनेषु। इत्यस्माद्चप्रत्ययः। तथा च भोजराजीये वियो जक् इति युन्युपादितम्। बवयोरभेदः। वेति प्रजायते गच्छत्यनेनाद्यर्थ्यपितेति वा। अत्र चौरखामी वीज्यते वेति वा बीजं वाजिकौकिकः इति। बीजिः स्यात् प्रेरणक्रिया इति माधवः। प्रेयंते हि कार्यकरणाय वा बीजम्॥" इति निघण्टौ देवराजयज्वा। २। २। १५।) कारकम्। (यथा, गीतायाम्। ७। १०।

"बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पापं सनातनम्॥"  
यथा च मनौ। १। ५६।

"यदाद्यमादको भूत्वा बीजं स्यात् चरिणु च॥"  
शुकम्। इत्यमरः। (यथा मनौ। १। ८।

"अप एव सवर्णादौ तासु बीजमवाहयत्॥"  
बीजं शुकम्। इति मेधातिथिः। बीजं प्रक्तिरूपम्। इति ज्ञानकः। यथा च तत्रैव। १०। ७२।

"यस्माद्बीजप्रभावेण तियं गवा ऋषयोऽभवन्।  
पूजिताश्च प्रशस्ताश्च तस्माद्बीजं प्रशस्यते॥")

श्रीकृष्णस्य सर्ववतारबीजत्वं यथा,—  
दानव उवाच।

"अधुना ह्यङ्गरूपसं परिपूर्वतमः स्वयम्।  
सर्वेषामवतारानां बीजरूपः सनातनः॥"  
इति ब्रह्मवैवर्ते श्रीकृष्णजन्मखण्डे २२ अध्यायः।

अङ्कुरः। (यथा, महाभारते। ५। १२। १६।

"न तस्य बीजं रोहति बीजकावे  
न चास्य वर्षं वर्षति वर्षकावे।

भीतं प्रपन्नं प्रहति शश्वे  
न चातारं लभते ज्ञानमिच्छन्॥")

तस्माधानम्। इति मेदिनी। मज्जा। इति राजनिर्घण्टः। गणितविशेषः। यथा,—

"उत्पादकं यत्प्रवर्त्तितं पुद्गे-  
रहितं सतुपुस्येय चांखाः।

अक्तस्य हतुक्तस्य तदेकबीज-  
मयक्तमीशं गणितं च वन्दे॥

पूर्वं धोक्तं अक्तमयक्तबीजं  
प्रायः प्रश्ना नो विना अक्तयुक्ता।

ज्ञातुं शक्या मन्धोभिर्नितान्तं  
यस्मात्तस्माद्दक्षिं बीजक्रियाश्च॥"

इति भास्कराचार्यविरचिते सिद्धान्तशिरोमणौ बीजगणिताध्यायस्य प्रथमद्वितीयश्लोकौ।  
मन्मः। यथा। अथ सुवनेश्वरीमन्मः।

"नकुलीशोऽपिमाहृणो वामनेत्राहं चन्द्रवान्।  
बीजं तस्याः समखातं सेवितं विद्धि-

काङ्क्षिभिः॥"  
नकुलीशो हकारः। अय्यी रेफः। वामनेत्र-  
मीकारः। अहं चन्द्रोऽशुखारः। ह्रीं। ॥  
अन्नपूर्णाया बीजम्। ह्रीं नमो भगवति मादे-  
श्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा॥ ॥ अथ त्रिपुटा-  
बीजम्। श्रीं ह्रीं क्लीं॥ त्वरिताबीजम्। ॐ  
ह्रीं हुं छे च छे च स्त्री हूं छे ह्रीं षट्॥\*  
अथ त्रिधाबीजम्। ऐं क्लीं त्रिलङ्किने मदनवे  
स्वाहा॥\*। वचप्रसारिण्याः। ऐं ह्रीं त्रिल-  
ङ्किने मदनवे स्वाहा॥\*। अथ दुर्गाबीजम्।  
ॐ ह्रीं हुं दुर्गायै नमः॥\*। महिषमर्दिनी-  
बीजम्। ॐ महिषमर्दिनि स्वाहा॥\*। जयदुर्गा  
बीजम्। ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षणि स्वाहा॥\*।  
शूलिनीबीजम्। ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्टयह  
हुं षट् स्वाहा॥\*। वागीश्वरीबीजम्। वद  
वद वाग्वादिनि स्वाहा॥\*। पारिजात-  
सरस्वतीबीजम्। ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं  
सरस्वत्यै नमः॥\*। गणेशबीजम्। गं॥\*।  
हेरम्बीजम्। ॐ गं नमः॥\*। हरिदा-  
गणेशबीजम्। स्त्रं॥\*। लक्ष्मीबीजम्। श्रीं॥\*।  
महालक्ष्मीबीजम्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं  
जगत्प्रसव्यै नमः॥\*। सूर्यबीजम्। ॐ ह्रिणि  
सूर्य्ये वादिह॥\*। श्रीरामबीजम्। रां रामाय  
नमः। जानकीवक्त्रभाय हुं स्वाहा॥\*। विष्णु-  
बीजम्। ॐ नमो नारायणाय॥\*। श्रीकृष्ण-  
बीजम्। गोपीजनवक्त्रभाय स्वाहा॥\*। वासु-  
देवस्य। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥\*।  
बालगोपालस्य। ॐ क्लीं लक्ष्माय॥\*। लक्ष्मी-  
वासुदेवस्य। ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीवासु-  
देवाय नमः॥\*। दधिवामनस्य। ॐ नमो  
विष्णवे सुरपतये महावलाय स्वाहा॥\*।  
हयग्रीवस्य।

ॐ उद्गिरत्प्रथमोद्गोपसर्ववागीश्वरेश्वर।  
सर्ववेदमयापिन्त्य सर्वं बोधय बोधय॥\*।  
शुचिं हस्य।

उपं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।  
शुचिं भौषणं भद्रं न्युत्तमं नमान्यहम्॥\*।

नरहरिवीजम्। र्हा ह्रीं ह्रीं हुं षट्॥\*।  
हरिहरस्य। ॐ ह्रीं ह्रीं शहरनारायणाय  
नमः ह्रीं ह्रीं ॐ॥\*। वराहस्य। ॐ नमो  
भगवते वराहरूपाय भूर्भुवःपतये भूपतिर्त्वं  
मे देहि ददापय स्वाहा॥\*। शिवस्य।  
हौं॥\*। न्युत्तमस्य। ॐ जुं वः॥\*।  
दक्षिणावर्तिबीजम्। ॐ नमो भगवते दक्षिणा-  
वर्तये मङ्गं मेधां प्रयच्छ स्वाहा॥\*। पिन्ता-  
मणिवीजम्। र च म र य औं कं॥\*।  
नीलकण्ठस्य। प्रीं न्रीं ठः नमः शिवाय॥\*।  
चक्रस्य। रूज षट्॥\*। जैत्रपालस्य ॐ ह्रीं  
जैत्रपालाय नमः॥\*। वटुकभैरवस्य। ॐ ह्रीं  
वटुकाय आपटुहरणाय कुब कुब षटुकाय

ॐ ह्रीं हुं दुर्गायै नमः॥\*। महिषमर्दिनी-  
बीजम्। ॐ महिषमर्दिनि स्वाहा॥\*। जयदुर्गा  
बीजम्। ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षणि स्वाहा॥\*।  
शूलिनीबीजम्। ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्टयह  
हुं षट् स्वाहा॥\*। वागीश्वरीबीजम्। वद  
वद वाग्वादिनि स्वाहा॥\*। पारिजात-  
सरस्वतीबीजम्। ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं  
सरस्वत्यै नमः॥\*। गणेशबीजम्। गं॥\*।  
हेरम्बीजम्। ॐ गं नमः॥\*। हरिदा-  
गणेशबीजम्। स्त्रं॥\*। लक्ष्मीबीजम्। श्रीं॥\*।  
महालक्ष्मीबीजम्। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं  
जगत्प्रसव्यै नमः॥\*। सूर्यबीजम्। ॐ ह्रिणि  
सूर्य्ये वादिह॥\*। श्रीरामबीजम्। रां रामाय  
नमः। जानकीवक्त्रभाय हुं स्वाहा॥\*। विष्णु-  
बीजम्। ॐ नमो नारायणाय॥\*। श्रीकृष्ण-  
बीजम्। गोपीजनवक्त्रभाय स्वाहा॥\*। वासु-  
देवस्य। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥\*।  
बालगोपालस्य। ॐ क्लीं लक्ष्माय॥\*। लक्ष्मी-  
वासुदेवस्य। ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीवासु-  
देवाय नमः॥\*। दधिवामनस्य। ॐ नमो  
विष्णवे सुरपतये महावलाय स्वाहा॥\*।  
हयग्रीवस्य।

ॐ उद्गिरत्प्रथमोद्गोपसर्ववागीश्वरेश्वर।  
सर्ववेदमयापिन्त्य सर्वं बोधय बोधय॥\*।  
शुचिं हस्य।

उपं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।  
शुचिं भौषणं भद्रं न्युत्तमं नमान्यहम्॥\*।

नरहरिवीजम्। र्हा ह्रीं ह्रीं हुं षट्॥\*।  
हरिहरस्य। ॐ ह्रीं ह्रीं शहरनारायणाय  
नमः ह्रीं ह्रीं ॐ॥\*। वराहस्य। ॐ नमो  
भगवते वराहरूपाय भूर्भुवःपतये भूपतिर्त्वं  
मे देहि ददापय स्वाहा॥\*। शिवस्य।  
हौं॥\*। न्युत्तमस्य। ॐ जुं वः॥\*।  
दक्षिणावर्तिबीजम्। ॐ नमो भगवते दक्षिणा-  
वर्तये मङ्गं मेधां प्रयच्छ स्वाहा॥\*। पिन्ता-  
मणिवीजम्। र च म र य औं कं॥\*।  
नीलकण्ठस्य। प्रीं न्रीं ठः नमः शिवाय॥\*।  
चक्रस्य। रूज षट्॥\*। जैत्रपालस्य ॐ ह्रीं  
जैत्रपालाय नमः॥\*। वटुकभैरवस्य। ॐ ह्रीं  
वटुकाय आपटुहरणाय कुब कुब षटुकाय

ॐ उद्गिरत्प्रथमोद्गोपसर्ववागीश्वरेश्वर।  
सर्ववेदमयापिन्त्य सर्वं बोधय बोधय॥\*।  
शुचिं हस्य।

उपं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।  
शुचिं भौषणं भद्रं न्युत्तमं नमान्यहम्॥\*।

नरहरिवीजम्। र्हा ह्रीं ह्रीं हुं षट्॥\*।  
हरिहरस्य। ॐ ह्रीं ह्रीं शहरनारायणाय  
नमः ह्रीं ह्रीं ॐ॥\*। वराहस्य। ॐ नमो  
भगवते वराहरूपाय भूर्भुवःपतये भूपतिर्त्वं  
मे देहि ददापय स्वाहा॥\*। शिवस्य।  
हौं॥\*। न्युत्तमस्य। ॐ जुं वः॥\*।  
दक्षिणावर्तिबीजम्। ॐ नमो भगवते दक्षिणा-  
वर्तये मङ्गं मेधां प्रयच्छ स्वाहा॥\*। पिन्ता-  
मणिवीजम्। र च म र य औं कं॥\*।  
नीलकण्ठस्य। प्रीं न्रीं ठः नमः शिवाय॥\*।  
चक्रस्य। रूज षट्॥\*। जैत्रपालस्य ॐ ह्रीं  
जैत्रपालाय नमः॥\*। वटुकभैरवस्य। ॐ ह्रीं  
वटुकाय आपटुहरणाय कुब कुब षटुकाय

ॐ उद्गिरत्प्रथमोद्गोपसर्ववागीश्वरेश्वर।  
सर्ववेदमयापिन्त्य सर्वं बोधय बोधय॥\*।  
शुचिं हस्य।

उपं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।  
शुचिं भौषणं भद्रं न्युत्तमं नमान्यहम्॥\*।

नरहरिवीजम्। र्हा ह्रीं ह्रीं हुं षट्॥\*।  
हरिहरस्य। ॐ ह्रीं ह्रीं शहरनारायणाय  
नमः ह्रीं ह्रीं ॐ॥\*। वराहस्य। ॐ नमो  
भगवते वराहरूपाय भूर्भुवःपतये भूपतिर्त्वं  
मे देहि ददापय स्वाहा॥\*। शिवस्य।  
हौं॥\*। न्युत्तमस्य। ॐ जुं वः॥\*।  
दक्षिणावर्तिबीजम्। ॐ नमो भगवते दक्षिणा-  
वर्तये मङ्गं मेधां प्रयच्छ स्वाहा॥\*। पिन्ता-  
मणिवीजम्। र च म र य औं कं॥\*।  
नीलकण्ठस्य। प्रीं न्रीं ठः नमः शिवाय॥\*।  
चक्रस्य। रूज षट्॥\*। जैत्रपालस्य ॐ ह्रीं  
जैत्रपालाय नमः॥\*। वटुकभैरवस्य। ॐ ह्रीं  
वटुकाय आपटुहरणाय कुब कुब षटुकाय

ॐ उद्गिरत्प्रथमोद्गोपसर्ववागीश्वरेश्वर।  
सर्ववेदमयापिन्त्य सर्वं बोधय बोधय॥\*।  
शुचिं हस्य।

उपं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।  
शुचिं भौषणं भद्रं न्युत्तमं नमान्यहम्॥\*।

नरहरिवीजम्। र्हा ह्रीं ह्रीं हुं षट्॥\*।  
हरिहरस्य। ॐ ह्रीं ह्रीं शहरनारायणाय  
नमः ह्रीं ह्रीं ॐ॥\*। वराहस्य। ॐ नमो  
भगवते वराहरूपाय भूर्भुवःपतये भूपतिर्त्वं  
मे देहि ददापय स्वाहा॥\*। शिवस्य।  
हौं॥\*। न्युत्तमस्य। ॐ जुं वः॥\*।  
दक्षिणावर्तिबीजम्। ॐ नमो भगवते दक्षिणा-  
वर्तये मङ्गं मेधां प्रयच्छ स्वाहा॥\*। पिन्ता-  
मणिवीजम्। र च म र य औं कं॥\*।  
नीलकण्ठस्य। प्रीं न्रीं ठः नमः शिवाय॥\*।  
चक्रस्य। रूज षट्॥\*। जैत्रपालस्य ॐ ह्रीं  
जैत्रपालाय नमः॥\*। वटुकभैरवस्य। ॐ ह्रीं  
वटुकाय आपटुहरणाय कुब कुब षटुकाय

ॐ उद्गिरत्प्रथमोद्गोपसर्ववागीश्वरेश्वर।  
सर्ववेदमयापिन्त्य सर्वं बोधय बोधय॥\*।  
शुचिं हस्य।

उपं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।  
शुचिं भौषणं भद्रं न्युत्तमं नमान्यहम्॥\*।

नरहरिवीजम्। र्हा ह्रीं ह्रीं हुं षट्॥\*।  
हरिहरस्य। ॐ ह्रीं ह्रीं शहरनारायणाय  
नमः ह्रीं ह्रीं ॐ॥\*। वराहस्य। ॐ नमो  
भगवते वराहरूपाय भूर्भुवःपतये भूपतिर्त्वं  
मे देहि ददापय स्वाहा॥\*। शिवस्य।  
हौं॥\*। न्युत्तमस्य। ॐ जुं वः॥\*।  
दक्षिणावर्तिबीजम्। ॐ नमो भगवते दक्षिणा-  
वर्तये मङ्गं मेधां प्रयच्छ स्वाहा॥\*। पिन्ता-  
मणिवीजम्। र च म र य औं कं॥\*।  
नीलकण्ठस्य। प्रीं न्रीं ठः नमः शिवाय॥\*।  
चक्रस्य। रूज षट्॥\*। जैत्रपालस्य ॐ ह्रीं  
जैत्रपालाय नमः॥\*। वटुकभैरवस्य। ॐ ह्रीं  
वटुकाय आपटुहरणाय कुब कुब षटुकाय

ॐ उद्गिरत्प्रथमोद्गोपसर्ववागीश्वरेश्वर।  
सर्ववेदमयापिन्त्य सर्वं बोधय बोधय॥\*।  
शुचिं हस्य।

उपं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।  
शुचिं भौषणं भद्रं न्युत्तमं नमान्यहम्॥\*।

नरहरिवीजम्। र्हा ह्रीं ह्रीं हुं षट्॥\*।  
हरिहरस्य। ॐ ह्रीं ह्रीं शहरनारायणाय  
नमः ह्रीं ह्रीं ॐ॥\*। वराहस्य। ॐ नमो  
भगवते वराहरूपाय भूर्भुवःपतये भूपतिर्त्वं  
मे देहि ददापय स्वाहा॥\*। शिवस्य।  
हौं॥\*। न्युत्तमस्य। ॐ जुं वः॥\*।  
दक्षिणावर्तिबीजम्। ॐ नमो भगवते दक्षिणा-  
वर्तये मङ्गं मेधां प्रयच्छ स्वाहा॥\*। पिन्ता-  
मणिवीजम्। र च म र य औं कं॥\*।  
नीलकण्ठस्य। प्रीं न्रीं ठः नमः शिवाय॥\*।  
चक्रस्य। रूज षट्॥\*। जैत्रपालस्य ॐ ह्रीं  
जैत्रपालाय नमः॥\*। वटुकभैरवस्य। ॐ ह्रीं  
वटुकाय आपटुहरणाय कुब कुब षटुकाय

ॐ उद्गिरत्प्रथमोद्गोपसर्ववागीश्वरेश्वर।  
सर्ववेदमयापिन्त्य सर्वं बोधय बोधय॥\*।  
शुचिं हस्य।

उपं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।  
शुचिं भौषणं भद्रं न्युत्तमं नमान्यहम्॥\*।